।। श्री रामलाल प्रभवे नमः।।

श्री सिद्धगुफा, सँवाई, आगरा

व

उसकी शाखाओं में होने वाली दैनिक आरती

दिव्य आरती पूजन

(विशुद्ध रूप)

सौजन्य :

आचार्य दासलाल शर्मा

श्री सिद्धगुफा, सँवाई, आगरा

आरती पूजन

ॐ

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

गुरुर्बह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

चरणारविन्दं गुरुदेव नमामि,
गुरुदेवशरणं गुरुदेव नमामि।
भवभव्यभावं त्रयतापहारं,
भवभयविनाशं गुरुदेव नमामि।।
कल्याण रूपं आनन्द कन्दं,
धारामृतं शिव गुरुदेव नमामि!
अरेण्यं वरेण्यं सुरेश रमेशं,
त्रयदेवरुपं गुरुदेव नमामि।।
न जानानि जापं न जानामिध्यानं,
पशुपतिरूपं गुरुदेव नमामि।
भूतेश प्रणम्यं अनन्तस्वरूपं,
भक्तस्यत्राणं गुरुदेव नमामि।।

घटाकाश गुप्तं महाकाश रूपं,
चिदाकाशव्यक्तं गुरुदेव नमामि।
अकल्पं अनूपं तपन्तं दिगन्तं,
अगोगोचराणां गुरुदेव नमामि।।
सिद्धि अगम्यस्तवपाद् पद्मे,
प्रबुद्धं शुभेशं गुरुदेव नमामि।।

प्रार्थना

श्री सद्गुरु समान दाता नहीं तीन लोक के माहि।
सत् वस्तु बकसो वही, जाको अन्त न आहि।।

तुम दाता मैं मँगता श्री गुरुदेव दयाल।
योग प्रेम वर्षा करऊ काटो सब जंजाल।।

पिता से माता सौ गुना करती सुत सों प्यार।
माता में हरि सौ गुना हरि सों गुरु सौ बार।।

सात द्वीप नवखण्ड में सद्गुरु से बड़ा न कोय।
कर्ता करे न कर सकें, सद्गुरु करे सो होय।।

अढ़सठ तीर्थ श्री सद्गुरु चरण परवी होत अखण्ड।
सहजो ऐसो थाम ना सकल अण्ड ब्रह्माण्ड।।

सब पर्वत स्याही करुं घोरु समुन्दर जाय।
धरती का कागज करूं श्री सद्गुरु स्तुति न समाय।।

ऐसी कृपा प्रभु जी कीजिये श्री चरण कमल लिपटाय।
आठ पहर चौंसठ घड़ी सुन्दर दर्श दिखाय।।

ऐसी कृपा प्रभु जी कीजिये श्री चरण कमल लिपटाय।
आठ पहर चौंसठ घड़ी मनहर दर्श दिखाय।।

ऐसी कृपा प्रभु जी कीजिये श्री चरण कमल लिपटाय।
आठ पहर चौंसठ घड़ी आत्म रूप लखाय।

ऐसी कृपा प्रभु जी कीजिये श्री चरण कमल लिपटाय।
आठ पहर चौंसठ घड़ी कोई श्वास न खाली जाय।।

नाशवान संसार से चित्त को देओ मोड़।
बहिर्मुखी प्रवाह से प्रभु जी अन्तर को देओ जोड़।।

अजर अमर अशरणं शरण अविनाशी अविकार।
आदि प्रभु करुणायतन सो विनवहुँ बारम्बार।।

सुरपति नरपति पतित गति श्री गंडाराम जी के लाल।
गति मति के तुम अधिपति करुणासिंधु दयाल।।

सुरपति नरपति पतित गति श्री गंडाराम जी के लाल।
गतिमति के तुम अधिपति आये प्रभु श्री रामलाल।।

श्री गुरुचरण कमल प्रणाम मम जो दायक फल चार।
बुद्धिहीन इस पतित को लीजे नाथ उबार।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव-देव।।

प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि भव सागर मग्न पोतं स्त्रोतं नरामयहरस्य सुधारसस्य।
तेजस्विनं तपनद्विवन्मनोज्ञं श्री रामलाल प्रभुमीश नवावतारम्।।

यस्य कृपांशात्सुविनष्ट पापाः तृतीय नेत्रेण समुद्गतेन।
महाप्रकाशेन सुसिद्ध लोकं, ईक्षेच बाह्ये मुलखस्तमाश्रये।।

यस्य प्रसादात्पतितास्सुपावनाः भवन्ति संसार सुतारणाः शिवाः।
योगीश्वराणां परमेश्वरं हरिम्, श्री रामलाल प्रभुमीशमाश्रये।।

निर्वाणाष्टक

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुण निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।

निराकारमोंकार मूलं तुरीयं, गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालुं, गुणागार संसार पारंनतोऽहम्।।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं, मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारूगंगा, लसद्भाल बालेन्दु कंठे भुजंगा।।

चलत्कुण्डलं सु-भू-नेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुम्।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशम्।
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहं भवानी पतिं भावगम्यम्।।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्ताप नाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम्।
जराजन्म दुःखौघ तातप्यमानं, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।

सद्गुरु वन्दना

वंदऊँ गुरुपद पदुमपरागा,
सुरूचि सुवास सरस अनुरागा।
अमिय मूरिमय चूरन चारु,
शमन सकल भवरूज परिवारू।।
सुकृत् शंभुतन विमल विभूती,
मंजुल मंगल मोद प्रसूती।
जनमन मंजु मुकुर मल हरणी,
किर्ये तिलक गुणगण वशकरणी।।
श्री गुरु पद नख मणि गण ज्योती,
सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती।
दलन मोहतम हंस प्रकाशू,
बड़े भाग्य उर आवहिजासू।।
उघरहिं विमल विलोचन हिय के।
मिटहि दोष दुःख भव रजनी के।
सूझहिं रामचरित मणिमानिक।
गुप्त प्रकट जहँ जो जेहि खानिक।।

दोहा

यथा सुअंजन आँजि दृग् साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देरवहि शैल वन भूतल भूरि निधान।।
श्री गुरु मूरति चन्द्रमा सेवक नयन चकोर।
आठ पहर निरखत रहूँ श्री गुरु चरणन की ओर।।
श्रवन सुयश सुनि आयहूँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरत हरण शरण सुखद रघुवीर।।
शील क्षमा दया गुण सागर जामे रूप अपार।
सभी देव दर पर रहे सो विनबहुँ बारम्बार।।